A Multidisciplinary and Multilingual Double-Blind Peer-Reviewed
International Research Journal
TRIPURI

श्रीमद् देवीभागवतपुराण में ज्ञान, तत्व, मूल्य मीमांसा का विश्लेषण

आशुतोष उपमन
शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विद्या शाखा
केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर परिसर
Email- upmanashutosh@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15763847

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र के द्वारा भारतीय ज्ञान प्रणाली मे निर्दिष्ट शिक्षा मे देवी भागवत के सिद्धांतों का विश्लेषण किया गया है, जिसमें विशेष रूप से ज्ञान, तत्व और नैतिक मूल्यों का विवेचन है। देवी भागवत पुराण सभी पुराणों मे अपना विशिष्ट स्थान रखता है प्रस्तुत पत्र मे देवी के रूप में शक्ति, ब्रह्मज्ञान, और जीवन के उच्चतम उद्देश्य तथा नैतिक मूल्यों की प्राप्ति के मार्ग प्रशस्त करने पर चर्चा निर्दिष्ट की गई है।

(ज्ञानमीमांसा) : शोध पत्र में देवी भागवत के ज्ञान के तत्वों का विश्लेषण किया गया है, जिसमें आत्मज्ञान, ब्रह्मज्ञान और आत्मा के परम सत्य से संबंधित विचार प्रस्तुत किए गए हैं। इसे जीवन के आध्यात्मिक और भौतिक क्षेत्र के मध्य सामंजस्य स्थापित करने के रूप में देखा गया है।

(तत्वमीमांसा): देवी भागवत में भगवान की सत्ता, ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर की त्रिदेवता, और जगत की उत्पत्ति, स्थित और संहार की प्रक्रिया को तत्व के रूप में व्याख्यायित किया गया है। इसमें अद्वैत वेदांत और समग्र ब्रह्म के सिद्धांत पर भी विचार प्रस्तुत किए गए है।

(मूल्यमीमांसा): इस खंड में देवी भागवत के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है । जिसमे धर्म,सत्कर्म,नैतिकता,आत्म-निर्भरता,संयम, और मुक्ति के मूल्य व्यक्त किए गए हैं, जो व्यक्ति को अध्यात्मिक उन्नति की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं। देवी के प्रति श्रद्धा और समाज में सामूहिक नैतिकता की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया है।

यह शोध पत्र देवी भागवत के दार्शनिक दृष्टिकोण को समझने एवं भारतीय ज्ञान प्रणाली मे निर्दिष्ट शिक्षण अधिगम प्रणाली को आधुनिक भारतीय ज्ञान के संदर्भ में प्रासंगिक बनाने के लिए प्रयास रूप मे कार्य करता है।

कूट शब्द : श्रीमद् देवीभागवतपुराण में ज्ञान मीमांसा, तत्व मीमांसा, मूल्य मीमांसा, देवी- शक्ति, ब्रह्मज्ञान।

शोध पद्धति : प्रस्तुत शोध कार्य के लिए वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया हैं एवं प्राथमिक, द्वितीय स्त्रोतो का भी उपयोग किया गया है पत्र एवं पत्रिकाओ का अध्ययन एव शोध ग्रंथो का भी अध्ययन किया गया है।

शोध उद्देश्य :

- श्रीमद् देवी भागवत मे ज्ञान और मूल्य को भारतीय समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक दिशा पर विचार विश्लेषण करना।
- श्रीमद् देवी भागवत में प्रस्तुत जीवन के उद्देश्य, धर्म, और मोक्ष के सिद्धांतों का विश्लेषण करना।
- श्रीमद् देवी भागवत के उपदेशों के माध्यम से आदर्श और सकारात्मक मूल्यों के प्रभाव को समझना।
- श्रीमद् देवी भागवत मे निहित भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रभाव और प्रासंगिकता के संदर्भ में विश्लेषित करना।
- श्रीमद् देवी भागवत में प्रस्तुत नैतिक मूल्य धर्म,सत्कर्म,नैतिकता,आत्म-निर्भरता,संयम आदि का अध्ययन करना।
- श्रीमद् देवी भागवत में आत्मविकास के सिद्धांतों का विश्लेषण करना।
- श्रीमद् देवी भागवत में प्रस्तुत सिद्धांतों के द्वारा आध्यात्मिक उन्नति और आंतरिक शांति स्थापित करना।

प्रस्तावना

देवी शब्द की व्युत्पत्ति :

भारतीय वांगमय मे संस्कृत कोशकारों ने 'देवी' शब्द की व्युत्पत्तियाँ प्रदर्शित की है। देवी शब्द 'दिव' धातु से 'अच्' प्रत्यय करके तदनन्तर 'डीप्' प्रत्यय करने पर हमे प्राप्त होता है। वस्तुतः पहले 'देव' शब्द निष्पन्न होता है पुनः स्त्रीत्व की विवक्षा में उससे 'डीप्' प्रत्यय करके 'देवी' शब्द निष्पन्न किया जाता है। 'देव' शब्द की अनेक व्युत्पत्तियाँ हैं-

1. दिव् अर्थात् स्वर्ग में रहने के कारण देव कहे जाते हैं।
2. द्यु अर्थात् अन्तरिक्ष में रहने के कारण देव कहे जाते हैं।
3. द्योतन करने के कारण देव कहे जाते हैं।

इस प्रकार 'देव' शब्द हमारी आर्ष-परम्परा में उन सबके लिये प्रयुक्त होता है जो अलौकिक शक्ति सम्पन्न हैं तथा अपनी भक्ति या पूजा करने वाले जीवों का कल्याण करते हैं। इन्हीं देवों से सम्बद्ध स्त्री भाव को देवी की संज्ञा प्रदान की गयी है।

ऐश्वर्यवचनः शश्चक्तिः पराक्रम एव च।

***तत्स्वरूपात्योर्दात्री सा शक्तिः परिकीर्तिता।।* (देवी भागवत ९ /२ /१०)**

'शक्ति' शब्द की व्याख्या देवीभागवत में इस प्रकार की गयी है- 'शक्ति' शब्द में 'श' शब्द ऐश्वर्य वाचक है और 'क्ति' शब्द पराक्रम के अर्थ में है। 'श' अक्षर मङ्गलार्थक भी है। अर्थात् जिसमें ऐश्वर्य हो और जो मङ्गल (कल्याण) दाता हो, उसे शक्ति कहते हैं ।

शक्ति चित्त की क्रियाशीलता या गतिशीलता है।

ज्ञान मीमांसा

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।

***बलादाक्रष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।।* (दुर्गा सप्तश्लोकी)**

श्रीदुर्गा सप्तशती ग्रंथ मे ज्ञान के विषय मे चित्रण इस प्रकार आता है कि भगवती महामाया देवी ! ज्ञानियों के भी चित को बल(हट)पूर्वक, खींचकर मोह में ले जाती हैं ।

भगवती का अर्थ है- ***'ज्ञानबलादियुक्त ऐश्वर्यम्। तानि सन्ति अस्यामिति सा भगवती।'***

'दुर्गासप्तशती' में देवी की उत्पत्ति का विस्तृत वर्णन मिलता है। इसमें देवी को नित्यस्वरूपा कहा गया है। सम्पूर्ण जगत् उन्हीं का रूप है तथा उन्होंने समस्त विश्व को व्याप्त कर रखा है, तथापि उनका प्राकट्य अनेक प्रकार से होता है।

उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते ।

***योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते ॥* (दुर्गा सप्तशती १/६६)**

यद्यपि वे नित्य और अजन्मा हैं तथापि जब देवताओं का कार्य सिद्ध करने के लिये प्रकट होती हैं, उस समय लोक में उत्पन्न हुई कहलाती हैं। सबकी आदिभूता और प्रकाशस्वरूपा शक्ति है। सबकी आदिभूता कहने का तात्पर्य यह है कि ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र की भी वह आदि है, उसका आदि कोई नहीं है। इसी अभिप्राय का समर्थक मार्कण्डेय जी का वचन भी है।

यथा- ***सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी।***

लक्ष्यालक्ष्य स्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता ।। (कल्याण,शक्ति अङ्क)

अर्थात् त्रिगुण विशिष्टा परमेश्वरी महालक्ष्मी सबकी आदि कारण है, उसका स्वरूप व्यक्त भी है और अव्यक्त भी। वह समस्त दृश्य प्रपञ्चों को व्याप्त करके स्थित है।

जब ब्रह्माजी ने तमोगुण की अधिष्ठात्री देवी योगनिद्रा की स्तुति की तब वे भगवान् के नेत्र, मुख, नासिका, बाहु, हृदय और वक्षःस्थल से निकलकर अव्यक्तजन्मा ब्रह्माजी की दृष्टि के समक्ष खड़ी हो गयी। इस प्रकार ये देवी महामाया ब्रह्माजी के द्वारा स्तुति करने पर स्वयं प्रकट हुई थीं

विष्णुकर्णमलोद्भूतौ दानवौ मधुकैटभो। (मार्कण्डेयपुराण ८१ /५०)

मधुकैटभ की उत्पत्ति भगवान् विष्णु के कानों से बतायी गयी है-

विष्णु के कानों के मैल से मधुकैटभ के जन्म होने का क्या तात्पर्य है? विष्णु का अर्थ है- व्यापक। ***'विष्णोति व्याप्रोति इति विष्णुः।*** विष्णु का अर्थ है- प्राणशक्ति या अनाहद्नाद, जिसके द्वारा योगीजन समाधिस्थ एवं योगारूढ़ की स्थिति मे जाते हैं। योगीजन इस नाद को निरन्तर सुनते हैं। जब बाह्य कारणों से इस अनाहद्नाद के श्रवण में विघ्न पड़ता है तो योगी का योग भंग हो जाता है और वह ज्ञानपथ से विरत हो जाता है। ज्ञानपथ से हटने पर उसकी इन्द्रियाँ और मन भोगों की ओर आकृष्ट होते हैं। इस आकर्षण-मोह का नाम है **मधु** और विघ्न का नाम है **कैटभ।** ये दोनों अज्ञानजन्य हैं। श्रवणेन्द्रियाँ जब आभ्यान्तर नाद पर केन्द्रित न होकर बाह्य जगत् के शब्दों पर केन्द्रित हो जाती हैं, तब मधुकैटभ का जन्म होता है।

'मोहयेतौ दुराधर्षावसुरो मधुकैटभौ। (मार्कण्डेयपुराण ८१ /६६)

अहङ्कार और विषय-सुख शुम्भ और निशुम्भ है। आलस्य धूम्रलोचन है और रागद्वेष चण्डमुण्ड हैं। वासना रक्तबीज है। इनका वध होने पर ही शक्ति की साधना पूर्ण होती है। देवी ज्ञानमयी और सच्चिदानन्दमयी है। मधुकैटभ वध में देवी का सत्तारूप, महिषासुरवध में देवी का चिन्मयतारूप और शुम्भ-निशुम्भ वध में आनन्दमयता रूप में अभिव्यक्त हुआ है।

मार्कण्डेयपुराण में देवी को महामाया और मोह के रूप में दर्शाया गया है। यह विष्णु की माया है जो मनुष्य, पशु, पक्षी सबको मोहित कर रही है। जो ज्ञानी हैं, उनके मन में भी बलात् मोह उत्पन्न करती है। वही जगत् की रचना करती है और वही प्रसन्न होकर मुक्ति प्रदान करती है। संसार के बन्धन का कारण वही शक्ति है और मुक्ति का कारण भी वही सनातनी विधा है।

महामाया हरेश्चैत्ततथा सम्मोह्यते जगत्। ज्ञनिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति। तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम् ।।
सैषा प्रसन्नावरदा नृणां भवति मुक्तये। सा विद्या परमामुक्तेर्हेतुभूता सनातनी।।
संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी।। **(मार्कण्डेयपुराण, ८१/४१,४४)**

वह शक्ति जिसके द्वारा देवी समस्त जगत् को मोहित करती है उसे माया नाम से संबोधित करते हैं। देवी का ही दूसरा नाम माया है। देवी कहती हैं कि कारणभूत ब्रह्म मेरा ही रूप है, वह माया का अधिष्ठान और सम्पूर्ण जगत् का साक्षी है। इसे प्रकृति भी कहते हैं-

मायाधिष्ठानभूतं तु सर्वसाक्षि निरामयम्।

माया प्रकृतिसञ्ज्ञस्तु द्वितीयो भाग ईरितः।

साच माया पराशक्तिः शक्तिमत्यमहमीश्वरी।।' **(देवी भागवत,१२/८/६२,६६)**

वह परमनिर्गुण, निराकार शक्ति जब सृष्टि रचना के लिये उद्यत होती है, तब उसका नाम माया हो जाता है। स्वरूपतः माया अनिर्वचनीय है। उसके कार्यों के द्वारा ही उसका ज्ञान होता है। ईश्वर जिस शक्ति से समस्त भूतों के कारण बनते हैं और उनके विषय भोग तथा मोक्ष की सिद्धि के लिये स्वनिर्मित पञ्चभूतों के द्वारा नाना प्रकार के देव, मनुष्यादि जीवों के शरीर की रचना करता है, उसे माया कहते हैं।

एभिर्भूतानि भूतात्मा महाभूतैर्महामुज।

ससर्जेच्चावचान्याद्यः स्वमात्रात्मप्रसिद्धये ।। **(देवी भागवत,११/३/३)**

मानव की मूल प्रेरणायें ही देवी की विभूतियाँ हैं। इनके द्वारा अगद् व्यवहार चलता है। ये विभूतियाँ हैं- , दया, गति, तुष्टि, पुष्टि, क्षमा, रति, मति, कीर्ति, स्मृति, घृति, श्रद्धा, मेधा, स्वधा, स्वाहा, क्षुधा, निद्रा,लज्जा, जृम्भा (जम्हाई) तन्द्रा।

इसमें रति जीव शरीर का मूल कारण है। मुनि ऐश्वर्य है। सुख और सम्पदा के लिये मानव जीवनपर्यन्त प्रयत्नशील रहता है। शुद्धि इसमें सहायक होती है। मति का अर्थ यहाँ विवेक से है, जिससे मानव के व्यवहारों में परिष्कार निरंतर प्रस्फुट होता रहता है। कीर्ति अर्थात् यश की लिप्सा भी मनुष्यों में जन्मजात होती है। इससे मानव में त्याग और शौर्य की भावना उद्घोधित होती है। स्मृति से वह पूर्व त्रुटियों, हानि-लाभों को स्मरण निरंतर क्रिया रूप मे घटित होता रहता है ।

इस ग्रंथ में ज्ञान और भक्ति का गहरा संबंध दर्शाया गया है, और ज्ञान मीमांसा का उद्देश्य इस अद्वितीय और दिव्य ज्ञान को समझना और जीवन में उसका समावेश करना है।

1. ज्ञान की प्राप्ति : देवी भागवत में यह बताया गया है कि सर्वोत्तम ज्ञानी वही है, जो आत्मा और ब्रह्म के अस्तित्व को जानने मे अपनी रुचि रखता हो। यहाँ ज्ञान का उद्देश्य केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि आत्मिक उन्नति है, जो व्यक्ति को आत्मज्ञान और आत्मा के वास्तविक स्वरूप को स्पष्टता से अवगत कराता है।

2. विद्या और अविद्या का भेद : ज्ञान मीमांसा में अविद्या (अज्ञान) और विद्या (ज्ञान) का भेद समझाया जाता है। अविद्या व्यक्ति को माया के भ्रम में फंसा देती है, जबकि विद्या व्यक्ति को दिव्य और वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति कराती है, जिससे आत्मा के वास्तविक स्वरूप को पहचाना जा सकता है। जिससे परा विद्या ओर अपरा विद्या को प्राप्त किया जा सकता है।

3. देवी की शरण में ज्ञान का महत्व : श्री मद देवी भागवत में देवी के उपासक को यह समझाया जाता है कि देवी की उपासना से न केवल भक्ति की प्राप्ति होती है, बल्कि ज्ञान भी मिलता है, जो व्यक्ति को संसार के मोह-माया की पीड़ा से बाहर निकालता है। देवी के रूप में ब्रह्मविद्या प्रतीक रूप मे द्रष्ट होती हैं, और उनकी आराधना से आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

4. ज्ञानी और अज्ञानी का भेद : देवी भागवत में यह भी बताया गया है कि ज्ञानी व्यक्ति माया के बंधनों से मुक्त होता है, जबकि अज्ञानी व्यक्ति भ्रम और मोह के जाल में फंसा रहता है। ज्ञान की प्राप्ति से व्यक्ति के जीवन में शांति, सुख और समृद्धि आती है।

इस प्रकार, श्रीमद देवी भागवत में ज्ञान मीमांसा का उद्देश्य आत्मा का ज्ञान, संसार की माया से मुक्ति, और देवी के दिव्य रूपों को समझकर आत्मसाक्षात्कार की ओर मार्गदर्शन करना है।

तत्व मीमांसा

पुराणों में शक्तितत्त्व की परम्परा वेदों से ही आयी है। (ऋग्वेद १०.१२५) में देवी की महिमा वर्णित है। वेदों में देवी का वर्णन वाणी और देवताओं की माता अदिति के रूप में मिलता है। देवीभागवत के अनुसार शक्ति ही ब्रह्माण्ड की रचना करती है। वेदों ने जिसे ब्रह्म कहा है, वही देवी परमात्मिका शक्ति है।

ते वै शक्तिंपरां देवीं परमास्यां परमात्मिकाम्।
ध्यायन्ति मनसा नित्यं नित्यां मत्वा सनातनीम् ।। **(देवी भागवत,१/८/४७,४८)**

ब्रह्मा, विष्णु और शिव भी शक्ति द्वारा निर्मित है। विष्णु में सात्विकी शक्ति, शिव में तामसी शक्ति, ब्रह्म में राजसी शक्ति रूप मे स्थित है। इस तरह निर्गुण शक्ति ही इन तीनों देवों में सगुण रूप में प्रकट होती है।

धूर्तेः पुराणचतुरैहैरिशंकराणाम्,
सेवापराश्च विहितास्तव निर्मितानाम् ।।
सर्ववयेदमखिलं विहितं भवादो,
त्वं पासि वै हरिहरप्रमुखान्दिगीशान् ।। **(देवी भागवत,५/१९/१२-३१)**

नासदीयसूक्त में देवी का अव्यक्तरूप तम बताया गया है। ***'तम आसीत् तमसा गूढ़मग्रे।'*** इसीलिए इसे अविद्या और माया भी कहते हैं। इसी शक्ति के कारण ब्रह्माण्ड के समस्त तत्त्व (सूर्य, अग्नि, पवन, आकाश, पृथिवी आदि) शक्तिमान माने गये हैं। जिस मानव में इस परमशक्ति का स्फुरण अधिक मात्रा में लक्षित होता है, उसे देवता कहते हैं। देवताओं की सम्मिलित शक्ति को देवी कहते हैं। यह शक्ति न तो पुरुष है, न स्त्री और न नपुंसक। आवश्यकतानुसार यह अनेक रूप धारण करती है। यह कहा जा सकता है कि यह सगुणरूप में देव है और निर्गुण रूप में शक्ति रूप मे स्थित है । संसार के समस्त पदार्थ शक्तिरूप

हैं। शक्ति के बिना विश्व का अस्तित्व जड़ता लिए हुए है। कालिकापुराण के अनुसार देवी वस्तुतः एकरूप है, परन्तु वह विभिन्न कार्यों के सम्पादनार्थ नानारूप धारण करती हुई दिखाई पड़ती है -

एकैव तु महामाया कार्यार्थं भिन्नतां गता। **(**कालिकापुराण,५८/५१**)**

1. ब्रह्म और आत्मा का तत्त्व

श्रीमद देवी भागवत में यह स्पष्ट किया गया है कि ब्रह्म (सर्वव्यापी परम सत्य) और आत्मा (व्यक्ति का चेतन स्वरूप) एक दूसरे से अभिन्न हैं। ब्रह्म का स्वरूप निराकार,परम और अनंत है। आत्मा ब्रह्म का ही अंश है, जो व्यक्ति के कार्य कारण रूपी शरीर में स्थित है। आत्मा का उद्देश्य परम तत्व से एकीकार करना और ब्रह्म तत्व मे विलीन होना है।

श्री देवी को ब्रह्मविद्या का साकार रूप माना गया है, जो आत्मा और ब्रह्म के मध्य चेतना प्रस्फुट करती हैं। देवी का ज्ञान ही वह तत्त्व है, जो जीवात्मा को ब्रह्म से जोड़ता है और उसे मुक्ति की ओर प्रेरणास्पद करता है।

2.माया और अविद्या का तत्त्व

माया (संसार की भ्रांतियों और भ्रामक शक्तियों का तत्त्व) को देवी के रूप में देखा गया है। देवी का तत्त्व माया और शक्ति का साकार रूप है, जो विश्व के निर्माण, पालन और संहार के समय में सक्रिय रहती है। देवी की माया का कार्य जीवात्मा को मोह-माया के आवरण में आच्छादित करना है, और यह माया तब समाप्त होती है जब जीवात्मा आत्मज्ञान के तत्व को प्राप्त करता है।

अविद्या का तत्त्व व्यक्ति के असत्य और भ्रमपूर्ण ज्ञान से जुड़ा हुआ होता है, जबकि परम शुद्ध तत्त्व ज्ञान (विद्या) उसे आत्मा के वास्तविक स्वरूप का अनुभव कराता है।

3. देवी शक्ति का तत्त्व

देवी शक्ति को सर्वोच्च तत्त्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है। देवी भागवत में देवी की शक्ति को ब्रह्मा, विष्णु, शिव और अन्य देवताओं के समस्त कार्यों और शक्तियों के स्रोत के रूप में वर्णित किया गया है। देवी के तत्त्व को शक्ति तत्त्व कहा जाता है। सृष्टि का निर्माण,पालन और संहार का कार्य भी देवी शक्ति के द्वारा हि परिपूर्ण सिद्ध होता है । वह साकार और निर्विकारी दोनों रूपों में व्यक्त होती है, और प्रत्येक रूप में उसकी शक्ति का अद्वितीय प्रभाव स्पष्ट प्रतीत होता है।

4. संसार और आत्मा का तत्त्व

संसार माया का कार्य है और वह अस्थायी है, जबकि आत्मा अमर और शाश्वत है। संसार को असत (अस्थायी) और आत्मा को सत (शाश्वत) के रूप में माना गया है। यह स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि आत्मा का उद्देश्य संसार के मोह से मुक्त होना और ब्रह्म से एकत्व प्राप्त करना है। संसार का वास्तविक स्वरूप

स्पष्ट रूप से तब समझ में आता है, जब व्यक्ति आत्मज्ञान मे स्थित होकर माया के भ्रम से स्वयं को बाहर निकाल लेता है।

देवी शक्ति को सर्वोच्च तत्त्व के रूप में पूजा जाता है, जो जीवन की परम सत्ता को उद्घाटित करती है और आत्मा के शुद्धिकरण में सहायक होती है।

मूल्य मीमांसा

श्रीमद देवी भागवत में मूल्य मीमांसा का अत्यधिक महत्व है, जो जीवन के आदर्श, नैतिकता, और उच्चतम सिद्धांतों पर आधारित है। श्रीमद देवी भागवत में मूल्य मीमांसा का तात्पर्य है, जीवन के उच्चतम आदर्शों का पालन करना। इस ग्रंथ में देवी की उपासना और उनके स्वरूपों का आदान-प्रदान करने के माध्यम से व्यक्तित्व के मूल्य और आस्थाओं को स्पष्ट किया गया है। मूल्य मीमांसा का उद्देश्य जीवन के वास्तविक उद्देश्य को पहचानना, व्यक्ति के आचार-व्यवहार को सही दिशा में मार्गदर्शन करना, और उसे अध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाना है।

इसमें धर्म,सत्कर्म,नैतिकता,आत्म-निर्भरता,संयम, और मुक्ति के मूल्य व्यक्त किए गए हैं, जो व्यक्ति को अध्यात्मिक उन्नति की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं। देवी की उपासना से व्यक्ति न केवल आत्मिक शांति और मोक्ष प्राप्त करता है, बल्कि समाज में उच्च नैतिक मानकों को स्थापित करने में भी सक्षम सिद्ध होता है।

1. धार्मिक मूल्य

श्रीमद देवी भागवत में धर्म का एक गहन अर्थ प्रस्तुत किया गया है। धर्म केवल बाह्य आचार-व्यवहार का पालन नहीं है, बल्कि यह आत्मा के उच्चतम मूल्य, सत्य और न्याय के सिद्धांतों का पालन करने का मार्ग प्रशस्त है। देवी के रूप में धर्म का प्रतीक भी देखा गया है, जो विश्व के संतुलन और धर्म की रक्षा करती हैं। धर्म का पालन न केवल व्यक्तिगत जीवन को संतुलित करता है, बल्कि सामाजिक जीवन में भी सद्भाव और शांति स्थापित करता है। धर्म को आत्मा की वास्तविकता और ब्रह्म के साथ एकत्व की ओर मार्गदर्शक माना गया है। श्री देवी के प्रति आस्था और भक्ति से व्यक्ति धर्म के उच्चतम आदर्शों को अपनाता है और अपने जीवन को शुद्ध करता है।

2. सात्विक मूल्य

सत्कार्य (अच्छे कर्म) और सत् आचरण का अनुसरण भी देवी भागवत में महत्वपूर्ण माना गया है। सत्कर्मों का जीवन में पालन करने से व्यक्ति का मन पवित्र होता है, और वह आत्मसाक्षात्कार की ओर अग्रसर होता है। हमारे प्रत्येक कार्य का परिणाम हमारे जीवन के संस्कारों पर निर्भर करता है। सत्कर्मों में भक्ति, ज्ञान, दया, सत्य और अहिंसा प्रमुख हैं। इन आदर्शों का पालन करके व्यक्ति अपने जीवन को सार्थक बना सकता है और संसार में स्वयं के जीवन मे सकारात्मक परिवर्तन प्राप्त सकता है।

3. नैतिकता और आस्थाएँ

व्यक्ति को अपनी नैतिक जिम्मेदारियों को समझना चाहिए और अपने कर्तव्यों का पालन पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी से करना चाहिए। देवी की उपासना और भक्ति से व्यक्ति अपने भीतर की नैतिकता को सशक्त करता है और जीवन को सही दिशा मे परिवर्तित कर सकता है। जीवन के प्रारंभ ओर अन्तिम क्षण तक देवी के प्रति श्रद्धा और विश्वास बनाने के लिए समर्पण के भाव को प्रबुद्ध करना ही सार्थक सिद्ध है। इससे व्यक्ति का आचार और विचार दोनों ही परिशुद्ध होते हैं।

4.आत्म-निर्भरता और संयम

व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक, और आध्यात्मिक संयम बनाए रखने के लिए देवी की परम शक्ति का अनुष्ठान आवश्यक है। संयम के माध्यम से व्यक्ति अपने इच्छाओं और आकांक्षाओ पर नियंत्रण रख सकता है, जिससे वह स्वयं के आत्मज्ञान की ओर प्रेरित होता है। आत्म-निर्भरता का मतलब है, कि व्यक्ति अपनी परिस्थितियों पर निर्भर होने के बजाय आत्मविश्वास के साथ जीवन यापन करता है।

5.समानता और सद्भाव

देवी की उपासना से व्यक्ति में समानता और समाज के प्रति आदर की भावना उत्पन्न होती है। यह समाज में सामूहिक शांति को बढ़ावा देता है। सद्भावना का मूल्य जीवन में किसी भी परिस्थिति में शांति बनाए रखने और दूसरों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने के रूप में देखा जाता है। देवी के साथ एकात्मता होने पर यह भावना व्यक्ति में प्रकट होती है, जिससे वह समाज में अपने कर्तव्यों का समुचित प्रकार से निर्वहन करता है।

6. मुक्ति और मोक्ष का मूल्य

इस ग्रंथ का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को मोक्ष के मार्ग पर निरंतर चलने की प्रेरणा देना है । मोक्ष प्राप्ति के लिए व्यक्ति को संसार के तात्कालिक सुखों और भौतिक वस्तुओं से परे जाकर आत्मज्ञान और ब्रह्म के साथ एकात्मता की ओर बढ़ना चाहिए। देवी की उपासना इस मार्ग पर सहायक होती है, क्योंकि देवी अपने भक्तों को माया और संसार के भ्रम से मुक्त कर देती हैं।

निष्कर्ष :

श्री मद देवी भागवत पुराण में ज्ञान, तत्व, और मूल्य मीमांसा का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि यह ग्रंथ न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह मानव जीवन के आदर्श, आचार-व्यवहार, और उच्च नैतिक मूल्यों की स्थापना स्थापित करने में भी अत्यधिक प्रभावशील है। देवी भागवत में ज्ञान का उल्लेख केवल बौद्धिक ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्मज्ञान और आत्म-उद्धार की दिशा में मार्गदर्शन करने वाली शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

तत्व मीमांसा के संदर्भ में, देवी भागवत में परम सत्य (ब्रह्म) और जीवात्मा के संबंध को स्पष्ट किया गया है। देवी, जो कि शक्तिपूंज के रूप में प्रस्तुत होती हैं, जीवन के विभिन्न परिस्थितियो में सृजन, पालन और संहार के रूप में सक्रिय रूप से कार्य करती हैं, जिससे जीवात्मा को उसका वास्तविक उद्देश्य अवगत करने और प्राप्त करने का मार्ग मिलता है।

मूल्य मीमांसा का अध्ययन यह दर्शाता है कि श्री मद देवी भागवत में नैतिक और धार्मिक मूल्यों की प्रतिष्ठा अत्यधिक महत्वपूर्ण है। श्रद्धा, भक्ति, करुणा, सत्य और अहिंसा जैसे मूल्य व्यक्ति के जीवन में संतुलन और सुख प्राप्ति मे सहायक होते है। समाज में शांति और समृद्धि सुनिश्चित करने मे अपनी पूर्णता रखते हैं।

श्री मद देवी भागवत पुराण भारतीय ज्ञान प्रणाली मे धार्मिक ग्रंथ के रूप में हमे प्राप्त होता है। जीवन के मूल्य और सिद्धांतों को समझकर उसे अपने जीवन में स्थापित करने के लिए भी एक अमूल्य स्रोत है। यह ग्रंथ न केवल आत्मा के अद्वितीय सत्य का उद्घाटन करता है, बल्कि व्यक्ति के जीवन को एक उच्च आध्यात्मिक और नैतिक दिशा की ओर प्रेरित करता है।

सन्दर्भग्रन्थ –

१. चौबे, सरयू प्रसाद. भारतीय शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, इलाहाबाद ,प्रकाशनवर्ष 1951.
२. पाठक, आर. पी. भारतीय प्राणाली, प्रकाशकआकांक्षा प्रकाशन,प्रकाशन वर्ष 2022
३. कुमार, कृष्ण. प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति, प्रकाशक सरस्वती सदन, प्रकाशन वर्ष 2017
४. देवी भागवत ९ /२ /१०
५. दुर्गा सप्तशती १/६६
६. दुर्गा सप्तश्लोकी
७.कल्याण,शक्ति अङ्क १९९७
८.मार्कण्डेयपुराण ८१ /५०
९. मार्कण्डेयपुराण ८१ /६६
१०.मार्कण्डेयपुराण, ८१/४१,४४
११.देवी भागवत,१२/८/६२,६६
१२.देवी भागवत,११/३/३
१३.ऋग्वेद १०.१२५
१४.देवी भागवत,१/८/४७,४८
१५.देवी भागवत,५/१९/१२-३१
१६.नासदीयसूक्त
१७.कालिकापुराण,५८/५१